D.P. I (H) Ist Paper

डा० पूनम कुमारी
राजनीति शास्त्र विभाग/
सर्व नारायण सिंह राम कु० सिंह
महाविद्यालय सहरसा

Marxism
(मार्क्सवाद)

राजदर्शन के क्षेत्र में मार्क्सवादी ऐसी विचारधारा है जो उन्नीसवीं शताब्दी में ही नहीं, बीसवीं शदी के चिन्तन में भी अपना स्थान रखती है। इस विचारधारा ने इतने महान जन आन्दोलन का जन्म दिया जितना कि ईसाई धर्म के अविर्भाव के बाद अब तक न हुआ था। मार्क्स ने वैज्ञानिक समाजवाद का जन्म दिया। मार्क्स द्वारा प्रतिपादित समाजवाद एक काल्पनिक विचारधारा मात्र न होकर विधिवत् रूप से प्रतिपादित एक व्यावहारिक दर्शन है। इस दृष्टि से मार्क्स को प्रथम वैज्ञानिक समाजवादी और मार्क्स द्वारा प्रतिपादित दर्शन साम्यवाद को "वैज्ञानिक समाजवाद" कहा जा सकता है।

मार्क्स के प्रमुख सिद्धान्त :- कार्लमार्क्स के सिद्धान्त की मुख्य बातें निम्न लिखित हैं :-

(1) द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी सिद्धान्त :- मार्क्स के दर्शन का सारा ढाँचा उसके द्वन्द्ववादी भौतिकवाद की विचारधारा पर आधारित है। यह दर्शन की वह आधारशिला है जिसपर समस्त साम्यवाद अवलम्बित है।

मार्क्स का द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद हीगल के द्वन्द्ववाद से प्रभावित है। परन्तु दोनों में बहुत अधिक भिन्नता है। मार्क्स ने कहा है "मेरी द्वन्द्वात्मक पद्धति न केवल हीगलवादी पद्धति से भिन्न है, वरन् वह उसके बिल्कुल विपरीत है। मेरे हीगल में द्वन्द्वात्मक तर्क आपने सिर के बल खड़ा पाया, मैंने उसे सीधा कर पैरों के बल खड़ा कर दिया।

मार्क्स के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की विशेषता निम्नलिखित है —

(i) द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद वस्तुओं तथा घटनाओं को प्रकृति के क्षेत्र में एक दूसरे से सम्बद्ध मानता है।

(ii) द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद प्रकृति को अस्थिर तथा निरन्तर परिवर्तनशील मानता है।

(iii) उनके अनुसार समाज में गुणात्मक परिवर्तन धीरे धीरे न होकर शीघ्रता से तथा अचानक होते हैं।

(iv) द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद प्राकृतिक जगत की आर्थिक तथ्यों के आधार पर व्याख्या करता है।

(v) द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद प्राकृतिक वस्तुओं में शाश्वत अन्तर्विरोध को स्वीकार करता है।

(2) **इतिहास की आर्थिक व्याख्या** :— मार्क्स के दर्शन से द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की भाँति इतिहास की आर्थिक व्याख्या का सिद्धान्त भी महत्वपूर्ण है।

मार्क्स के अनुसार किसी भी समाज के राजनीतिक संगठन अथवा उसकी न्याय-व्यवस्था को जानने के लिए उसके आर्थिक ढाँचे को जानना आवश्यक है, इतिहास की सभी घटनाएँ आर्थिक व्यवस्था में होने वाले परिवर्तनों का परिणाम मात्र है। मार्क्स के अनुसार मानव जाति आदिमयुग दासयुग, सामन्तवादी युग और पूँजीवादी युग से गुजर चुकी है। प्रथम तीन युगों का वर्णन करने के बाद मार्क्स कहता है, कि वर्तमान पूँजीवादी युग में समाज दो वर्गों पूँजीपतिवर्ग तथा सर्वहारावर्ग में बँट गया है। मार्क्स का मत था कि इस आर्थिक व्यवस्था में द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के अनुसार प्रतिक्रिया होगी और परिणामस्वरूप ऐतिहासिक विकास का पाँचवा युग 'श्रमिकवर्ग' के आधिपत्य का युग आयेगा। इस युग में 'श्रमिकवर्ग' उत्पादन के सब साधनों पर अधिकार करके पूँजीवाद का अन्त कर देगा और श्रमिकों का अधिनायकतन्त्र स्थापित हो जायगा। इस साम्यवादी युग में राज्यविहीन तथा वर्गविहीन समाज की स्थापना हो जायगी।

इस प्रकार मार्क्स अपनी इतिहास की भौतिकवादी धारणा के आधार पर ही पूँजीवाद के अन्त और समाजवाद की स्थापना की अवश्यम्भावना प्रकट करता है।

(3) वर्ग संघर्ष की धारणा :- साम्यवादी घोषणापत्र में वर्ग संघर्ष को विशेष महत्व प्रदान किया गया है। आर्थिक विषमता के कारण समाज में सदा दो वर्ग पूँजीपति तथा श्रमिक वर्ग रहे हैं। आर्थिक हितों के कारण ये वर्ग सदा ही संघर्षरत रहे हैं।

(4) अतिरिक्त मूल्य का सिद्धान्त :- वर्ग संघर्ष के मूल कारण की विवेचना मार्क्स ने अपने "अतिरिक्त मूल्य के सिद्धान्त" में की है। उसके विचार से प्रत्येक वस्तु का वास्तविक मूल्य केवल उसपर किये गये श्रम के कारण और उसके अनुसार ही होता है, अतः वस्तु बेचने से प्राप्त होनेवाला समस्त धन श्रमिक को ही मिलना चाहिए। परन्तु व्यवहार में इस धन से एक बहुत बड़ा भाग श्रमिक को देकर पूँजीपति शेष समस्त धन अपने पास रख लेता है। मार्क्स के अनुसार "पूँजीपति द्वारा अपने पास रख लिया गया यह धन ही अतिरिक्त मूल्य है।"

(5) अन्तरिम काल के लिए सर्वहारावर्ग के आधिपत्य की स्थापना - मार्क्स पूँजीवाद को समूल नष्ट करने के लिए अन्तरिम काल में राज्य का अस्तित्व आवश्यक मानता है, और इस अन्तरिम काल में "सर्वहारावर्ग के आधिपत्य" की बात कहता है।

(6) राज्यविहीन तथा वर्गविहीन समाज की स्थापना का आदर्श :- मार्क्सवादियों का विचार है कि श्रमिकों के आधिपत्य के बाद विरोधी वर्ग और एवं राज्य की सत्ता का भी अन्त हो जायगा और राज्यहीन तथा वर्गहीन समाज की स्थापना के बाद से ही वास्तविक साम्यवादी समाज का प्रारम्भ होगा।

आलोचना – कार्लमार्क्स के द्वारा मार्क्सवाद की जो व्याख्या की गयी है उसकी कटु आलोचना की जाती है। इसकी आलोचना निम्नलिखित आधारों पर की जाती है:—

(1) आर्थिक तत्व पर अत्यधिक अनावश्यक महत्व – मार्क्सवादियों ने समाज के सामाजिक, राजनीतिक और वैचारिक ढाँचे के निर्माण में आर्थिक तत्व को आवश्यकता से अधिक महत्व दिया है। लेकिन सामाजिक व्यवस्था के लिए आर्थिक तत्व के साथ ही राजनीतिक जीवन की महत्वपूर्ण घटनाएँ ऐतिहासिक स्थितियों और मानवीय आवश्यकताओं की पारस्परिक क्रिया भी आती है। अतः मार्क्स की विवेचना एकपक्षीय है।

(2) साम्यवादी दर्शन का दुरुहात्मक आधार असत्य है – मार्क्स के द्वारा हीगल की दुरुहात्मक प्रणाली का इतिहास के अध्ययन में ठीक-ठीक प्रयोग नहीं किया जा सका है। इतिहास मार्क्स के इस कथन की असत्यता प्रमाणित करता है कि समाज के विकास में सामन्तवाद के बाद पूँजीवाद तथा पूँजीवाद के बाद साम्यवाद का आविर्भाव होगा है।

(3) वर्ग संघर्ष का सिद्धान्त इतिहास द्वारा समर्थित नहीं है – मार्क्सवाद के अनुसार इतिहास में निरन्तर वर्ग संघर्ष चलता रहा है, किन्तु इतिहास में इस बात का कोई प्रमाण नहीं मिलता है।

(4) साम्यवाद एक सर्वाधिकार सिद्धान्त है – सैद्धान्तिक रूप से साम्यवाद के द्वारा वर्गविहीन और राज्यरहित समाज की धारणा का प्रतिपादन किया जाता है, किन्तु साम्यवाद का जो व्यावहारिक रूप साम्यवादी राज्यों में देखा गया है, उसके आधार पर साम्यवाद को एक सर्वाधिकारवादी दर्शन कहा जा सकता है।

(5) मार्क्सवाद हिंसा तथा रक्तपात का उपासक है – मार्क्सवादी

कहते हैं, "पूँजीवाद का अन्त साम्यवाद में न होकर एक ऐसी अराजकता में हो सकता है जिससे साम्यवादी आदर्शों से असम्बद्ध कोई निरंकुशवाद निकले।"

(6) राज्य एकवर्गीय तथा अस्थायी संगठन नहीं है:— राज्य एक अस्थायी संगठन नहीं है। 'राज्य के विलीन हो जाने' का सिद्धान्त भ्रमपूर्ण तथा भ्रान्तिजनक है।

(7) पूँजीवाद का चित्रण उसके परिणाम ठीक नहीं हैं:— साम्यवादी का विश्वास है कि पूँजीवादी व्यवस्था में बड़े पूँजीपति छोटे पूँजीपतियों का अन्त कर देंगे परन्तु सामान्यतः दोनों के बीच कोई विरोधाभास नहीं है।

(8) साम्यवाद धर्म और नैतिकता के महत्व को ठीक तक नहीं समझता साम्यवाद के द्वारा धर्म और नैतिकता को राजनीति से अलग करना साम्यवाद के लिए आवश्यक है।

(9) साम्यवादी क्रांति आशावादी है:— मार्क्स का यह नारा असत्य है कि विश्व के समस्त श्रमिकों के हित सामान्य हैं। क्योंकि विश्व के समस्त श्रमिक एक हो ही नहीं सकते।

निष्कर्ष — इस प्रकार मार्क्सवाद के सिद्धान्त की अनेक आलोचना की गयी है। चाहे कुछ भी हो, मार्क्स की गणना विश्व के सर्वाधिक महत्वपूर्ण राजनीतिक दार्शनिकों में होनी चाहिए। उसने विश्व को न केवल एक नवीन क्रांतिकारी विचारधारा दी बल्कि उस विचारधारा के द्वारा विश्व के इतिहास की दिशा तक बदल दी।"

———— X ————